2

जोखिम तथा बीमा

अध्याय की विषय वस्तु	पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम
विषयवस्तु	
अध्ययन उद्देश्य	
परिचय	
मुख्य पद	
अ. जोखिम का सिद्धान्त	2.1
ब. जोखिम के घटक	2.2
स. बीमायोग्य जोखिम	2.3
द. जोखिम हस्तान्तरण	2.4
य. जोखिमों का पूल बनाना	2.5
मुख्य बिन्दु	
प्रश्न–उतर	
स्व–परीक्षण प्रश्न	

अध्ययन उद्देश्य

अध्ययन उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने के बाद आप निम्न हेतु समर्थ होंगेः–

- बीमा के सम्बन्ध में जोखिम के सिद्धान्त की व्याख्या करने में;
- जोखिम के मुख्य घटकों की व्याख्या करने में;
- बीमित किये जा सकने वाले जोखिमों का वर्णन करने में;
- एक जोखिम हस्तान्तरण प्रक्रिया के रूप में बीमा के महत्व का वर्णन करने में;
- जोखिमों का पूल बनाने के सिद्धान्त की व्याख्या करने में।

परिचय

अध्याय 1 में हमने व्याख्या की थी कि बीमा जोखिम के हस्तान्तरण पर आधारित होता है तथा हमने कुछ जोखिमों पर संक्षिप्त नजर डाली थी जिनका एक व्यक्ति सामना कर सकता है।

इस अध्याय में, हम जोखिम की प्रकृति पर अधिक विस्तार से तथा जोखिम के प्रकार, जिनके विरूद्ध बीमा किया जा सकता है; पर नजर डालेंगे, साथ ही जोखिम किस प्रकार हस्तान्तरित या पूल में डाला जाता है के बारे में कुछ अधिक व्याख्या करेंगे। निःसन्देह एक जीवन बीमा अभिकर्ता के रूप में आप मानव जीवन से सम्बन्धित जोखिमों से सम्बद्ध होते है अतः इस अध्याय में हम अपना ध्यान इन्हीं पहलूओं पर केन्द्रित करेंगे। तथापि हम कुछ जोखिमों का सन्दर्भ देने का भी प्रयास करेंगे जो कि सामान्य बीमा में लागू होते है ताकि जोखिम के सिद्धान्त को इसके व्यापक अभिप्राय में अच्छी तरह समझने में आपको सहायता करेगा।

मुख्य पद			
इस अध्याय में निम्नलिखित पदों एवं बिन्दुओं की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है :			
जोखिम	जोखिम के घटक	अनिश्चितता	जोखिम
आपदा	समरूप जोखिम	दुर्घटनात्मक जोखिम	बीमायोग्य जोखिम
आर्थिक जोखिम	शुद्ध जोखिम	जोखिम हस्तान्तरण	जोखिम पूल बनाना

अ जोखिम का सिद्धान्त

अ1 जोखिम की परिभाषा

शब्द जोखिम का अनेक संदर्भों में उपयोग किया जा सकता है। बीमा में जोखिम का आशय उन सम्पतियों से है जिन्हें बीमित किया जा सकता है उदाहरणार्थ मानव जीवन; मकान, कार आदि। जोखिम की कोई सार्वभोमिक परिभाषा नहीं है क्योंकि इसे विभिन्न संदर्भों में उपयोग किया जा सकता है।

जोखिम की कुछ परिभाषाऍं इस प्रकार हैः–

- किसी क्षति या हानि की सम्भावना जोखिम है।
- किसी परिस्थिति से उत्पन्न परिणामों के सम्बन्ध में सन्देह या अनिश्चितता।
- किसी व्यक्ति या वस्तु को संभावित खतरे से आच्छादित होना जोखिम माना जाना है।

ध्यान रहे!

जीवन बीमा में शब्द ''जोखिम'' का उपयोग किसी अप्रिय घटना घटित होने की सम्भावना के लिए किया जाता है उदाहरण के लिए असमय मृत्यु या एक अकल्पनीय अपंगता।

किसी व्यक्ति को अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में अनेकों जोखिमों का सामना करना पड. सकता है; इनमें से कुछ है:

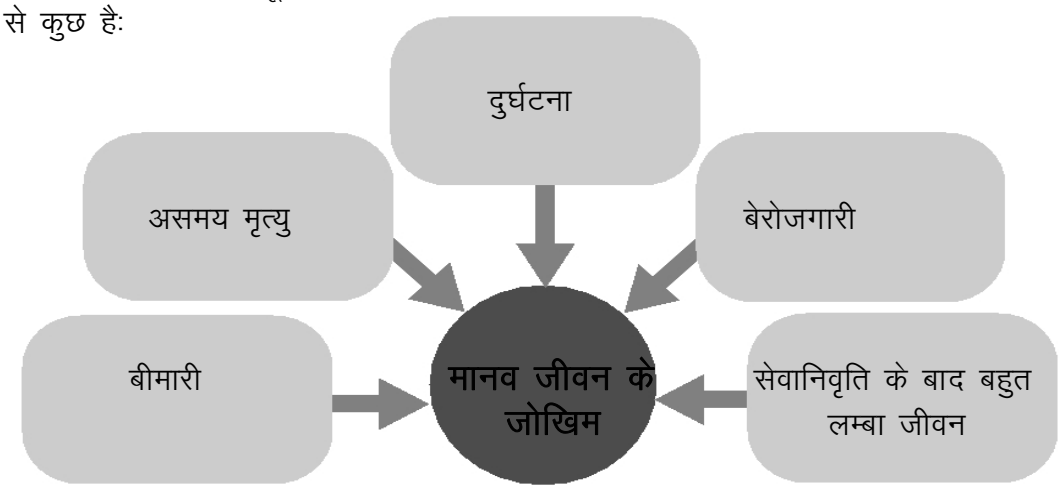

बीमा इन जोखिमों को होने से नहीं रोक सकता है, लेकिन उनका प्रभाव कम कर देता है यदि वे घटित हो। जीवन बीमा मुख्यतः दो जोखिमों– समय पूर्व मृत्यु तथा अत्याधिक लम्बे जीवन से संबंधित है। मानव जीवन से संबंधित अन्य जोखिम अधिकांशतः गैर–जीवन बीमा द्वारा कवर किये जाते है। तथापि जीवन बीमा कम्पनियाँ निम्न जोखिमों –दुर्घटना से मृत्यु या अपंगता, बीमारी तथा बेरोजगारी को कवर करने के लिए जीवन बीमा योजना के साथ अतिरिक्त लाभ के रूप में प्रदान करते है।

उदाहरण

राकेश गुप्ता एक निजी कम्पनी के लिए काम करने वाला विक्रय कर्मचारी है। उसके कार्य में उसके मासिक एवं त्रैमासिक विक्रय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपने क्षेत्र में विभिन्न खुदरा विक्रेताओं से मिलने के लिए लगातार यात्रा करना शामिल है। कई बार उसे बिना आराम के , कई दिनों तक लगातार यात्रा करनी पडती है।

राकेश गुप्ता को निम्नलिखित जोखिमों का खतरा है, जिसके लिए वह बीमा खरीदने पर विचार करे :–

असमय मृत्यु– राकेश के कार्य की मांग (प्रोफाइल) काफी तनाववयुक्त है जिसमें गहन यात्रा करना शामिल है। उसे असामयिक मृत्यु के जोखिम का सामना करना पड सकता है जो किसी दुर्घटना या तनाव जनित बीमारी से हो सकती है। एक उचित जीवन बीमा योजना राकेश की असमय मृत्यु के जोखिम के विरूद्ध उसके परिवार की सुरक्षा कर सकती है।

दुर्घटना– राकेश द्वारा की जाने वाली अनवरत यात्राओं के कारण, वह दुर्घटना के जोखिम की ओर प्रवृत है जिसके फलस्वरूप स्थायी या अस्थायी अपंगता हो सकती है। अपंगता लाभ युक्त एक जीवन बीमा योजना या एक पृथक् दुर्घटना बीमा पॉलिसी राकेश के अपंग हो जाने के जोखिम से उसके परिवार की सुरक्षा कर सकती है।

बीमारी– उसके कार्य की तनाववयुक्त प्रकृति के कारण, राकेश गंभीर बीमारियों के होने के जोखिम में है।एक गंभीर बीमारी लाभ के साथ एक जीवन बीमा योजना या एक स्वास्थ्य बीमा योजना, राकेश को कोई गंभीर बीमारी हो जाने पर अस्पताल के खर्चों की पूर्ति में सहायता कर सकती हैं।

बेरोजगारी– यदि राकेश की दुर्घटना होती है और वह अपंग हो जाता है, तो उसे अपना काम खोने तथा बेरोजगार होने के जोखिम का सामना करना पङ सकता है।

बहुत लम्बा जीवन जीना– यदि उसके कार्यशील जीवन के दौरान उपरोक्त में से कोई घटना नहीं घटती है तथा राकेश सेवानिवृत हो जाता है, उसे सेवानिवृति के पश्चात् बहुत लम्बे जीवन का जोखिम हो सकता है। वह एक निजी कम्पनी के लिए कार्य करता है जो उसके सेवा अनुलाभों के रूप में सेवानिवृति के पश्चात् मासिक पेंशन प्रदान नहीं करती है। अतः उसे अपने कार्यशील जीवन के दौरान एक सेवानिवृति पेंशन योजना में निवेश करके एक सेवानिवृति कोष बनाने की जरूरत होगी। सेवानिवृति पर वह बीमा कम्पनी से वार्षिकी योजना खरीद सकता है जो कि उसके सेवानिवृति के बाद नियमित वार्षिक राशि का भुगतान करेगी।

नोटः– विभिन्न जीवन बीमा योजनाओं, स्वास्थ्य बीमा योजनाओं तथा हानि प्रबन्धन के बारे में विवरण पर बाद के अध्यायों मे चर्चा की जायेगी।

ध्यान रहे!
बीमा कम्पनी केवल कुछ निर्दिष्ट जोखिमों के लिए कवर प्रदान करती है। ये जोखिम पॉलिसी प्रलेखों में सूचीबद्ध होते है। बीमा कम्पनी निर्दिष्ट जोखिमों के अलावा अन्य जोखिमों से उत्पन्न दावों के लिए सुरक्षा नहीं प्रदान करेगी।

प्रस्तावित क्रिया
किसी व्यक्ति द्वारा सामना किये जाने वाले जोखिमों का अध्ययन करने के पश्चात् परिवार के आय प्रदाता से चर्चा करें कि उनके कार्य की प्रकृति के कारण उन्हें कौन से जोखिमों का सामना करना पङ सकता है। यदि आप मुख्य आय प्रदाता हो; तो आपको व्यक्तिगत रूप से क्या जोखिम है?

अ 2 जोखिम के प्रति दृष्टिकोण

जोखिम के प्रति प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण अलग होता है। अतः हम सभी लोग जोखिमों का अलग तरीके से देखते है।
कुछ व्यक्ति जोखिम प्रतिधारण के इच्छुक होते है अतः जोखिम को स्वयं वहन करते है, जबकि अन्य सावधानी बरतते है तथा उसे किसी बीमा कम्पनी को हस्तान्तरित करते है।

ब जोखिम के घटक

जोखिम के घटकों में शामिल है :

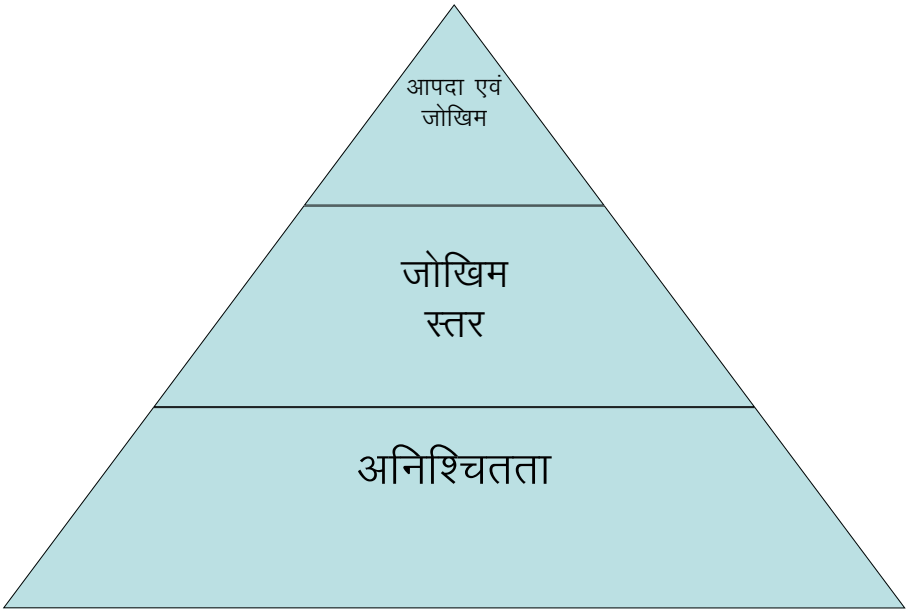

ब 1 अनिश्चितता

जीवन अनिश्चित है और इसलिए हमारा भविष्य अनिश्चित है। यदि हम पहले से यह जान सके कि एक घटना घटने जा रही है तो हम इसे रोकने या इससे पार पाने की योजना बना सकते है, तथा इस तरह सम्बंधित जोखिम सीमित या समाप्त भी किया जा सकता है।

एक सामान्य सिद्धान्त के अनुसार बीमा केवल अनिश्चित जोखिमों के लिए उपलब्ध होता है। इस कथन से एक प्रश्न उत्पन्न होता हैः– हम सभी जानते है कि मृत्यु निश्चित होती है– लेकिन हम यह भी जानते है कि जीवन बीमा मृत्यु के विरूद्ध उपलब्ध होता है इसलिए ऐसा कथन किस प्रकार सत्य हो सकता है?

यह सत्य है क्योंकि यद्यपि हम एक दिन मर जायेंगे, पर कब हमारी मृत्यु होगी, यह अनिश्चित है। मृत्यु के समय के बारे में अनिश्चितता ही है जो मृत्यु को बीमायोग्य बनाती है। एक बार जब मृत्यु का समय निश्चित हो जाता है, उदाहरण के लिए जब एक व्यक्ति किसी घातक बीमारी से ग्रसित हो जाता है, तब एक बीमा कम्पनी जोखिम को कवर नहीं करती है। निम्न प्रकरण अध्ययन प्रदर्शित करता है कि यह किस प्रकार कार्य करता है।

प्रकरण–अध्ययनः–

1. ऋषभ अग्रवाल एक 40 वर्षीय व्यवसायी है जिसकी एक स्वस्थ जीवनशैली है। प्रत्येक सुबह वह योग का अभ्यास करता है तथा धुम्रपान, तम्बाकू, तथा शराब से परहेज करता है। उसके पारिवारिक मेडिकल इतिहास में मधुमेह रोग का उल्लेख है उसके माता–पिता दोनों इससे ग्रसित हुए है। लेकिन ऋषभ अग्रवाल में मधुमेह रोग पहचाना नहीं गया है। क्या ऋषभ को जीवन बीमा दिया जा सकता है?

उतर हाँ है, क्योंकि ऋषभ ने एक स्वस्थ जीवन शैली बना रखी है तथा उसमे किसी रोग की पहचान नहीं की गई है। उसकी मृत्यु का समय अनिश्चित है।

2. राकेश शर्मा में एक बहुत विकसित अवस्था के ब्रेन ट्यूमर का पता चलता है। डॉक्टर जानते है कि वे उसे बचा नहीं सकते है तथा निकट भविष्य में राकेश की दुखद मृत्यु लगभग निश्चित है।क्या राकेश शर्मा को जीवन बीमा दिया जा सकता है?

उतर नहीं है, जीवन बीमा कम्पनियाँ राकेश को बीमा कवर देने का जोखिम नहीं लेगी क्योंकि उसकी मृत्यु एक बहुत कम समय के अन्तराल में लगभग निश्चित है।

ब 2 जोखिम का स्तर

हम जानते है कि कुछ घटनाओं की अपेक्षा कुछ अन्य घटनाओं के घटित होने की संभावना अधिक होती है तथा इसे सम्बद्ध जोखिम का स्तर प्रभावित करता है।
जोखिम का स्तर सामान्यतया निम्न पदों में आंकलन किया जाता हैः–

- एक निश्चित घटना घटने की प्रायिकता(या आवृति), तथा
- घटना का प्रभाव क्षेत्र (या गंभीरता) यदि वह घटती है।

आवृति

किसी निश्चित व्यक्ति के एक वर्ष के भीतर मृत्यु होने की सम्भावना की गणना बीमांककों द्वारा पूर्व के एकत्रित आंकड.ों से की जाती है, तथा मृत्यु दर सारणियों के रूप में उपलब्ध रहती है। यह बीमा कम्पनियों को किसी विशिष्ट घटना जैसे , विभिन्न परिस्थितियों में होने वाली मृत्यु की सम्भावना को निर्धारित कराती है।

व्यक्तियों के जीवन के प्रति जोखिम की प्रायिकता/सम्भावना उनकी आयु, अच्छे स्वास्थ्य, पारिवारिक मेडिकल इतिहास , जीवनशैली, जॉब प्रोफाइल आदि के आधार पर अलग होगी। व्यक्तियों के किसी विनिर्दिष्ट (नमूना) आयु वर्ग में से एक वर्ष के भीतर होने वाली मृत्यु की सम्भावित संख्या को मृत्यु दर कहते है।

उदाहरण

100 लोगों के दो भिन्न समूहों पर नजर डालें।प्रथम समूह की आयु वर्ग 30–39 है। इनमें से एक व्यक्ति की 31 वर्ष आयु से पूर्व मृत्यु हो जाती है। इस मामले में मृत्यु की प्रायिकता1% या 100 में 1 आवृति है। द्वितीय समूह का आयु वर्ग 60–69 है। इनमें से 15 लोगों की 61 वर्ष की आयु से पूर्व मृत्यु हो जाती है (15%)। इस तरह द्वितीय समूह में मृत्यु की आवृति प्रथम समूह से अधिक है।

गंभीरताः–

बीमा कम्पनियाँ जोखिम की सम्भाव्यता के आधार पर हानि की गहनता के परिणामस्वरूप देय दावों की राशि का आंकलन करती है यदि बीमित घटना वास्तव में घटित हो।

ध्यान रहें।

जीवन बीमा कम्पनियाँ अपने विगत आंकड.ो (दावों के अनुभव) के आधार पर जोखिम के स्तर का निर्धारण करती है। यदि विगत ऑकडे. यह दर्शाते है कि एक निश्चित आयु (66–70 कहे तो) में

हृदयाघात की अधिक प्रवृति होती है, तब इस आयु समूह के लिए जोखिम का स्तर उच्च माना जायेगा।

प्रकरण–अध्ययन

22 मई 2010 को एयर इण्डिया एक्सप्रेस फ्लाईट 812(दुबई–मंगलोर) क्रैश हो गई। 158 यात्री मारे गये। विमान क्रैश हादसे के शिकार लोगों को देय दावा राशि सहित दावें की कुल राशि करोड.ों रूपये में होने की आशंका होती है।

एयर लाईन बीमा में जोखिम की प्रकृति कम आवृति परन्तु उच्च गंभीरता(प्रभाव) के रूप में वर्गीकृत की जा सकती है क्योंकि एक एयर क्रैश की प्रायिकता निम्न है लेकिन जब यह घटित होता है , हानि का विस्तार बहुत अधिक होता है।

आपदा एवं जोखिम

यह जोखिम का अन्तिम पहलू है तथा हानि के कारणों से सम्बन्धित है।

आपदा से एक विशिष्ट घटना सन्दर्भित है जिससे हानि हो सकती है। यह हानि जीवन की हानि या सम्पति की हानि हो सकती है। प्राकृतिक आपदाएँ जैसे भूकम्प, तूफान, बाढ आदि सभी आपदायें है जिनके कारण जीवन की हानि या सम्पति की क्षति हो सकती है।

आपदायें ऐसे जोखिम होते है जो बीमित के विरूद्ध होते है । उदाहरणतः ऐसे जोखिम जिनसे एक व्यक्ति अपनी पॉलिसी की अवधि के दौरान मर जायेगा।

दूसरी ओर एक जोखिम , एक स्थिति है जो या तो एक खतरा होने की संभावना में वृद्धि करता है या फिर इसके होने पर विपरीत प्रभाव डालती है।

ध्यान रहें।

जोखिम आपदा के प्रचालन पर असर डालता है।

उदाहरण

यदि फेंफड.ो का केन्सर एक जोखिम है तो धूम्रपान एक आपदा हो सकती है जो जोखिम (फेंफड.ो के केन्सर) के होने की सम्भावना में वृद्धि कर सकता है।

प्रकरण–अध्ययनः–

26 जनवरी 2011 को गुजरात में आया भूकम्प भारत के इतिहास के सबसे बुरे भूकम्पों में से एक था। इस दुखद घटना में हजारों की संख्या में लोगों ने अपना जीवन गंवाया। लाखों की संख्या में लोग घायल हुए तथा हजारों करोड. रूपये की सम्पति नष्ट हो गई। भूकम्प का केन्द्र पश्चिमी गुजरात के भुज कस्बे के उतरी भाग में स्थित था।

इस मामले में भूकम्प एक आपदा थी तथा कमजोर निर्मित मकान तथा स्कूल जो भूकम्परोधी नहीं थे का आसानी से ढह जाना एक जोखिम था।

इसी प्रकार सुनामी की घटना में (जैसी एक 26 दिसम्बर 2004 को घटित हुई थी) जीवन एवं सम्पति की व्यापक स्तर पर हानि हुई थी; सुनामी आपदा है तथा समुद्र के तट की लहरों के निकट कमजोर बने मकान एवं इमारतें जिनके बहने के कारण उनके निवासियों का डूब जाना एक जोखिम है।

याद रखें कि बीमा आपदाओं को घटने से नहीं रोक सकता है, जोखिम के घटित होने से हुई हानि को बीमित किया जा सकता है।

जोखिम के प्रकार

जोखिम को निम्नलिखित प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता हैः–

भौतिक जोखिम	नैतिक जोखिम
जोखिम के भौतिक आयामों एवं लक्षणों से आशय है।	व्यक्ति की आदतों एवं क्रिया कलापों से आशय है जो जोखिम में वृद्धि करती है।
उदाहरण– हृदय रोग, उच्च रक्त चाप आदि का पारिवारिक इतिहास भौतिक जोखिम है।	ये किसी व्यक्ति के मानसिकता तथा दृष्टिकोण एवं व्यवहार से भी उत्पन्न हो सकती है। उदाहरणः– शराब का सेवन, धुम्रपान करना आदि।

जीवन बीमा के मामले में, कम्पनियाँ पॉलिसीधारकों को उनके जोखिम स्तर के आधार पर उच्च या निम्न जोखिम व्यक्तियों के रूप में वर्गीकृत कर जोखिम का विवरण लेती है। यह वर्गीकरण पॉलिसीधारकों की सम्पतियों तक भी विस्तारित होता है यदि वे उनका भी जोखिम बीमा करवाना चाहते है। इनमें से कुछ जोखिम के कारण व्यक्ति को उच्च जोखिम के रूप में निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जाता है:

जोखिम युक्त जॉब प्रोफाइलः– यदि किसी व्यक्ति के जॉब प्रोफाइल के कारण उसे खतरनाक परिस्थितियों में काम करना पङता है तो जोखिम बढेगा। उदाहरणतः एक रासायनिक कारखाने , विस्फोटक कारखाने, भूमिगत खानों आदि में काम कर रहा व्यक्ति एक आई टी कम्पनी या एक बैंक में काम कर रहे व्यक्ति की तुलना में अधिक जोखिम का सामना करता है।

वर्तमान मेडिकल स्थितिः– यदि किसी व्यक्ति में पहले से ही उच्च रक्त चाप या मधुमेह जैसी किसी स्वास्थ्य समस्या से ग्रस्त होने का पता लग चुका है, वह उन व्यक्तियों की तुलना में उच्च जोखिम पर होगा जो किसी बीमारी से ग्रसित नहीं है।

व्यक्ति की जीवन शैलीः– यदि कोई व्यक्ति एक स्वस्थ जीवनशैली बनाये रखता है तथा धुम्रपान करने, शराब सेवन से परहेज करता है तो जोखिम कम होगा। इसके विपरीत एक व्यक्ति, जो एक अधिक धुम्रपान करने वाला या शराबी है एक उच्च जोखिम प्रदर्शित करेगा।

व्यक्ति का आयु वर्ग :– बीमा चाहने वाला एक अधिक आयु का व्यक्ति कम आयु के व्यक्ति की तुलना में एक उच्च जोखिम माना जायेगा।

यदि किसी व्यक्ति को उच्च जोखिम के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, तो बीमा कम्पनी प्रस्ताव को स्वीकार या अस्वीकार कर सकती है। उच्च जोखिम के प्रस्ताव सामान्य शर्तों / दरों के स्थान

पर अतिरिक्त प्रीमियम , अधिकतम बीमा धन पर प्रतिबन्ध या ग्रहणाधिकार सहित स्वीकार किये जा सकते है। हम इस विषय पर अधिक विस्तार से अध्याय 4 में नजर डालेंगे।

इस पर विचार करें
किन्हीं तीन आपदाओं की पहचान करे जो किसी व्यक्ति के जीवन में घटित हो सकते है। कौन से जोखिम है जो इन आपदाओं को बढा सकते है।

प्रश्न 2.1
आपदा तथा जोखिम के मध्य अन्तर लिखिए।

स. बीमा योग्य जोखिम

निम्न प्रकार के जोखिम के विरूद्ध बीमा किया जा सकता हैः–

- वित्तीय जोखिम;
- शुद्ध जोखिम; तथा
- विशिष्ट जोखिम

स 1 वित्तीय जोखिम

जोखिमों के परिणाम जिन्हें आर्थिक पदों में मापा जा सकता है को वित्तीय जोखिम कहा जाता है।

निम्नांकित वित्तीय जोखिम माने जाते है जिनके लिए किसी व्यक्ति को योजना बनाने की जरूरत होती है :–

जीवन की हानि– इससे अभिप्राय किसी परिवार के आय प्रदाता की मृत्यु जोखिम से है यदि परिवार की सभी आर्थिक मांग / आवश्यक्ताएँ तब तक पूरी नहीं हुई हो।

- मृत्यु के पश्चात् आश्रितों को आय का एक स्थिर स्रोत प्रदान करना।
- उसकी मृत्यु होने पर विभिन्न वित्तीय दायित्वों जैसे गृह ऋण, कार ऋण आदि को पूर्ण रूप से चुकाने में आश्रितों की सहायता करना।

बीमारी/अपंगता– इसमें मेडिकल खर्चे तथा आय उपार्जन की हानि शामिल है।

- किसी भी प्रकार के मेडिकल खर्चों की व्यवस्था करना जो उत्पन्न हो सकते है।
- बीमारी/ अपंगता के कारण काम करने में असमर्थ होने पर वित्तीय सुरक्षा प्रदान करना।

संचित बचत

- बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए।
- बच्चों के विवाह के खर्चे प्रदान करने के लिए।
- एक व्यवसाय के लिए प्रारम्भिक पूँजी प्रदान करने के लिए आदि।

सेवानिवृतिः– इससे अभिप्राय सेवानिवृति के पश्चात् अपर्याप्त आय के जोखिम से है।

- सेवानिवृति के पश्चात आराम से रहने के लिए पर्याप्त पूँजी संचय के लिए।
- सेवानिवृति के पश्चात् आय के एक स्थिर स्रोत प्रदान करने के लिए।

उदाहरणः–
राघव मिश्रा एक लेखाकार है जो एक स्थानीय फर्म के साथ कार्य करता है। वह शादीशुदा एवं दो बच्चों का पिता है। उसकी पत्नी काव्या एक गृहिणी है। उसके वृद्ध पिता सुहास भी उसके साथ रहते है। सुहास मिश्रा एक किसान है तथा कृषि भूमि के एक छोटे टुकडे. के स्वामी है। तथापि, कृषि भूमि से प्राप्त आय उनके खर्चों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है अतः वह राघव पर आश्रित है।
परिवार के मुख्य आय प्रदाता सदस्य के रूप में, राघव के पास भविष्य में विभिन्न आकस्मिकताओं के रुप में अनेक उतरदायित्व है। जैसेः–

- जीवन की हानि– राघव को यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि उसके साथ कुछ अप्रिय घटित होने पर उसकी पत्नी, बच्चों एवं पिता के लिए वैकल्पिक आय का स्रेत बना रहें। आय आर्थिक दायित्वों जैसे दैनिक जीवन के खर्चे, बच्चों की स्कूल फीस, उसके पिता के मेडिकल खर्चों के प्रबन्धन आदि को पूरा करने हेतु पर्याप्त होनी चाहिए।
- बीमारी/ अपंगता– एक जोखिम है कि राघव के साथ कोई दुर्घटना हो सकती है तथा वह शारीरिक रूप से अयोग्य हो सकता है जिससे वह कार्य नहीं कर सके। इसके विरूद्ध सुरक्षा के लिए , उसके पास मेडिकल खर्चों तथा दैनिक जीवन के खर्चों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन होना चाहिए।
- बचत संचय– राघव को यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि उसके बच्चों की शिक्षा धन की कमी के कारण प्रभावित नहीं हो। अतः उसे अपने बच्चों की उच्च शिक्षा तथा विवाह के खर्चों के लिए बचत की जरूरत होती है।
- सेवानिवृति– राघव को यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि वह सेवानिवृति के पश्चात् आय का स्थिर स्रोत प्राप्त करें जो कि उसके मेडिकल तथा अन्य जीवन व्ययों की पूर्ति के लिए पर्याप्त होना चाहिए।

प्रश्न 2.2

ऐसे मुख्य वित्तीय जोखिम क्या है जिनके लिए व्यक्ति को योजना बनाने की जरूरत होती है?

स 2 शुद्ध जोखिम

शुद्ध जोखिम ऐसे जोखिम होते है जहाँ लाभ होने की संभावना नहीं होती है। शुद्ध जोखिम में, हानि भी हो सकती है तथा सर्वोतम संभव परिणाम बराबर विभाजन होता है।
शुद्ध जोखिम के साथ बीमित घटना घटने के परिणामस्वरूप होने वाले लाभ की संभावना शून्य होती है।

स 3 विशिष्ट जोखिम

विशिष्ट जोखिम अपने प्रभावों में निजी या स्थानीय होते है। इन जोखिमों के घटने का परिणाम विशिष्ट व्यक्ति या स्थानीय समुदाय को प्रभावित करता है।

द. जोखिम हस्तान्तरण

जैसा कि हमने अध्याय 1 में देखा है, बीमा का प्राथमिक कार्य जोखिम को एक व्यक्ति से एक बीमा कम्पनी को हस्तान्तरण करना हैं। बीमा कम्पनी जो जोखिम वहन करती है, बीमाकर्ता के रूप में

जानी जाती है तथा व्यक्ति जो अपना जोखिम हस्तान्तरित करता है बीमित के रूप में जाना जाता है।
जोखिम हस्तान्तरण इस मायने में बीमित वित्तीय सुरक्षा की अनुभूति करता है कि यदि उसे या उसकी वित्तीय सम्पतियों के साथ कुछ अप्रिय घटित होता है, तो पॉलिसी की शर्तों एवं निर्बन्धनों के अनुसार बीमा कम्पनी द्वारा हानि की क्षतिपूर्ति की जायेगी। इस हस्तान्तरित जोखिम के लिए, बीमित को एक निश्चित राशि(प्रतिफल) बीमाकर्ता को भुगतान करना होगा, जिसे प्रीमियम के नाम से जाना जाता है।

य. जोखिमों का पूल बनाना

जोखिमों का पूल बनाना बीमा के आधारभूत सिद्धान्तों में एक है।
जोखिमों का पूल बनाते समय एक बीमा कम्पनी समान जोखिमों का सामना करने वाले विभिन्न व्यक्तियों से एकत्रित प्रीमियम उन्हें बीमित करने के लिए पूल में डालती है। बीमा कम्पनी विभिन्न जोखिमों के लिए विभिन्न पूल के समुच्चय बनाती है।

उदाहरणः
बीमा कम्पनी द्वारा निम्न के लिए पृथक् पूल रखे जायेंगेः–

- जीवन बीमा
- कार बीमा
- गृह बीमा तथा
- यात्रा बीमा

व्यक्तियों से एकत्रित किया गया प्रीमियम पूल खाते में जमा किया जाता है। जब एक दावे का निपटान किया जाता है तो इस पूल में से इसका भुगतान किया जाता है। बीमा कम्पनी को यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि एकत्रित प्रीमियम दावा भुगतान को पूरा करने के लिए पर्याप्त हो। बीमा कम्पनी द्वारा प्रभारित प्रीमियम इस पूल के रखरखाव के लिए प्रशासनिक एवं अन्य खर्चों को पूरा करने हेतु भी पर्याप्त होना चाहिए। इसी प्रकार बीमा कम्पनी प्रीमियम के साथ एक निश्चित प्रतिशत लाभ भी शामिल करती है।

प्रश्न 2.3

बीमा मे जोखिम का पूल बनाना क्या है? क्या एक ही पूल कार बीमा एवं जीवन बीमा के लिए दावों के भुगतान में उपयोग किया जा सकता है?

य. बडी संख्या का सिद्धान्त

बीमा कम्पनियाँ कुल वार्षिक दावों की लागत का निर्धारण करने के लिए '' बडी संख्या का सिद्धान्त'' लागू करती है। बीमा कम्पनियॉ इस प्रायिकता का निर्धारण करती है कि यदि एक समान जोखिम के लिए बडी संख्या में लोगों को बीमित किया जाये तो उनको एक निश्चित दावा राशि का भुगतान करना होगा।

उदाहरण
एक बीमा कम्पनी द्वारा बीमित 1000 लोगों में से, यदि मृत्यु की प्रायिकता 1% है तब कम्पनी को 10 लोगों को दावों का भुगतान करना होगा।

बीमा कम्पनी जारी की गई पॉलिसियों की अवधि में उत्पन्न होने वाले दावों की सम्भावित संख्या के आधार प्रीमियम का निर्धारण करती है।

मुख्य बिन्दु
इस अध्याय में शामिल किये गये मुख्य विचारों को हम सारांश में निम्नानुसार व्यक्त कर सकते है:–
जोखिम का सिद्धान्त
• बीमा में, जोखिम उन सम्पतियों के सन्दर्भ में उपयोग किया जाता है जिनको बीमित किया जा सकता है; जैसे मानव जीवन, मकान, कार आदि।
• जोखिम एक निर्दिष्ट घटना के घटित होने पर एक व्यक्ति को हो सकने वाले हानि की सम्भावना है।
जोखिम के घटक
• जोखिम के घटकों में अनिश्चितता, जोखिम का स्तर, आपदा तथा जोखिम शामिल है।
• एक सामान्य सिद्धान्त के रूप में, बीमा केवल उन्हीं जोखिमों के लिए उपलब्ध होता है, जो अनिश्चित होते है।
• जोखिम का स्तर : दो मानकों द्वारा निर्धारित होता है। एक निश्चित घटना घटने की प्रायिकता तथा उस घटना के धटित होने से होने वाली हानि की सीमा या परिमाण।
• आपदा एक निर्दिष्ट घटना के लिए सन्दर्भित है जिसके कारण हानि हो सकती है। जोखिम एक स्थिति है जो एक आपदा के प्रचालन को प्रभावित करती है।
• जोखिम को भौतिक जोखिम तथा नैतिक जोखिम के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
बीमा योग्य जोखिम
• जोखिम, जिनका परिणाम आर्थिक पदों में मापा जा सकता है, वित्तीय जोखिम के रूप में जाने जाते है।
• शुद्ध जोखिम ऐसे जोखिम है जहाँ लाभ होने की संभावना नहीं होती है। शुद्ध जोखिम में हानि भी हो सकती है तथा सर्वोतम संभव परिणाम समान रूप से विभाजन से प्राप्त होता है।
• विशिष्ट जोखिमों का प्रभाव व्यक्तियों पर तथा सीमित क्षेत्र में होता है।
जोखिमों का पूल बनाना
• एक बीमा कम्पनी समान जोखिमों के लिए विभिन्न व्यक्तियों को बीमित करने के लिए उनसे प्राप्त प्रीमियम राशि को एक पूल में डालती है।
• बीमा कम्पनियाँ सम्भावित कुल दावों की लागत का निर्धारण करने के लिए '' बडी संख्या के सिद्धान्त'' को लागू करती है।

प्रश्न–उत्तर

2.1 यह जोखिम का अन्तिम पहलू है तथा हानि के कारणों से सम्बन्धित है।

आपदा से एक विशिष्ट घटना सन्दर्भित है जिससे हानि हो सकती है। यह हानि जीवन की हानि या सम्पति की हानि हो सकती है। प्राकृतिक आपदाएँ जैसे भूकम्प, तूफान, बाढ आदि सभी आपदायें है जिनके कारण जीवन की हानि या सम्पति की क्षति हो सकती है।

आपदा ऐसे जोखिम होते है जो बीमित के विरूद्ध होते है । उदाहरणार्थ ऐसे जोखिम जिनसे एक व्यक्ति अपनी पॉलिसी की अवधि के दौरान मर जायेगा।

दूसरी ओर एक जोखिम, एक स्थिति है जो या तो एक खतरा होने की संभावना में वृद्धि करता है या फिर इसके होने पर बुरा प्रभाव डालता है।

एक जोखिम एक आपदा के प्रचालन पर असर डालता है।

2.2 निम्नांकित वित्तीय जोखिम माने जाते है जिनके लिए किसी व्यक्ति को योजना बनाने की जरूरत होती है :–

जीवन की हानि– इससे अभिप्राय किसी परिवार के आय प्रदाता की मृत्यु जोखिम से है यदि परिवार की सभी आर्थिक मांग / आवश्यक्ताएँ तब तक पूरी नहीं हुई हो।

- मृत्यु के पश्चात् आश्रितों को आय का एक स्थिर स्रोत प्रदान करना।
- उसकी मृत्यु होने पर विभिन्न वित्तीय दायित्वों जैसे गृह ऋण, कार ऋण आदि को पूर्ण रूप से चुकाने में आश्रितों की सहायता करना।

बीमारी/अपंगता– इसमें मेडिकल खर्चे तथा आय उपार्जन की हानि शामिल है।

- किसी भी प्रकार के मेडिकल खर्चों की व्यवस्था करना जो उत्पन्न हो सकते है।
- बीमारी/ अपंगता के कारण काम करने में असमर्थ होने पर वित्तीय सुरक्षा प्रदान करना।

संचित बचत

- बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए।
- बच्चों के विवाह के खर्चे प्रदान करने के लिए।
- एक व्यवसाय के लिए प्रारम्भिक पूँजी प्रदान करने के लिए आदि।

सेवानिवृतिः– इससे अभिप्राय सेवानिवृति के पश्चात् अपर्याप्त आय के जोखिम से है।

- सेवानिवृति के पश्चात आराम से रहने के लिए पर्याप्त पूँजी संचय के लिए।
- सेवानिवृति के पश्चात् आय के एक स्थिर स्रोत प्रदान करने के लिए।

2.3 जोखिमों का पूल बनाते समय बीमा कम्पनी एक समान जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करने के लिए उन्हें बीमित करती है और बीमाधारक से प्राप्त प्रीमियम राशि को पूल में डालती है। बीमा कम्पनी विभिन्न जोखिमों के लिए अलग–अलग पूल के समुच्चय बनाती है।

जीवन बीमा के लिए पूल खाता कार बीमा के लिए पूल खाते से अलग रखा जायेगा।

एक जोखिम के पूल खाते को अन्य प्रकार के जोखिम के लिए दावों के निपटान में उपयोग नहीं किया जा सकता है।

स्व–परीक्षण प्रश्न

1. जोखिम के मुख्य घटकों की सूची बनाओं।
2. उन प्रकार के जोखिमों की सूची बनाओं जिन्हें बीमित किया जा सकता है।

आप अगले पृष्ठ पर उतर पायेंगे।

स्व–परीक्षण प्रश्नों के उतर

1. जोखिम के मुख्य घटक हैः–
   - अनिश्चितता
   - जोखिम का स्तर
   - आपदा तथा जोखिम

2. निम्नलिखित प्रकार के जोखिमों को बीमित किया जा सकता हैः–
   - वित्तीय जोखिम;
   - शुद्ध जोखिम; तथा
   - विशेष जोखिम।